

Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

Presented by: Acharya Kapil | Contact: 8756390767



ऋग्वेद मन्त्र १.१.३ : निरन्तर वर्धमान ऐश्वर्य और कीर्ति की प्राप्ति

अग्निनां रयिमंश्चवृत्पोषमेव दिवेदिवे ।
यशसं वीरवत्तमम् ॥३॥

पदपाठ

अग्निनां । रयिम् । अश्चवृत् । पोषम् । एव । दिवेऽदिवे । यशसम् । वीरवत्तमम् ॥३॥

शब्दार्थ (Word Meanings)

- अग्निना:** अग्नि के द्वारा (उपास्य परमेश्वर, भौतिक ऊर्जा/अग्नि, या यज्ञीय अग्नि के निमित्त से)।
- रयिम्:** धन और ऐश्वर्य को (विद्या, सुवर्ण आदि)।
- अश्चवृत्:** प्राप्त करता है।
- पोषम्:** पुष्ट होने वाले (निरन्तर बढ़ने वाले) धन को।
- एव:** ही (निश्चयपूर्वक)।
- दिवेदिवे:** प्रतिदिन, हर रोज़।
- यशसम्:** दान आदि उत्तम कर्मों से प्राप्त होने वाले यश (कीर्ति) से युक्त।
- वीरवत्तमम्:** अतिशय वीर पुरुषों (श्रेष्ठ विद्वान्, शूरवीर सन्तान और रक्षक) से युक्त।

मन्त्र का अनुवाद और दृष्टिकोण

१. आचार्य सायण का भाष्य (पारम्परिक / यज्ञीय अर्थ):

जो स्तुति के योग्य अग्निदेव हैं, उनके निमित्त से यजमान ऐसे धन (रयिम्) को प्राप्त करता है, जो प्रतिदिन बढ़ता ही रहता है (पुष्यमाण), जो कभी क्षीण नहीं होता। यह धन केवल लौकिक नहीं है, बल्कि दान आदि सत्कार्यों के कारण यश प्रदान करने वाला है। साथ ही, यह धन श्रेष्ठ वीर पुत्रों तथा भृत्यों (सहायकों) से युक्त होता है, क्योंकि धन के होने पर ही उत्तम पुरुष/सहायक प्राप्त होते हैं। (कर्मकाण्ड के अनुसार: अभिप्लव षडह के मध्यवर्ती उक्थों में तृतीय सवन के समय मैत्रावरुण द्वारा यह मन्त्र पढ़ा जाता है।)

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य (वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक अर्थ):

आध्यात्मिक अर्थ: मनुष्य सर्वव्यापक परमेश्वर (अग्नि) की उपासना से विद्या आदि उत्तम धन (रयिम्) को प्राप्त करता है। यह धन आत्मा और शरीर की पुष्टि कर सुख देने वाला, प्रतिदिन बढ़ने वाला, सर्वोत्तम कीर्ति बढ़ाने वाला और श्रेष्ठ विद्वानों तथा शूरवीरों से युक्त होता है।

वैज्ञानिक अर्थ: जो मनुष्य भौतिक अग्नि (ऊर्जा, ऊष्मा, Electricity, Thermodynamics) का उचित संयोजनों और यन्त्रों के साथ उपयोग करता है, वह प्रतिदिन अपार भौतिक सम्पदा, स्वर्ण आदि प्राप्त करता है। इस विज्ञान (Technology) के सदुपयोग से राष्ट्र शक्तिशाली वीरों (शूरवीर सैनिकों और वैज्ञानिकों) से युक्त होता है और विश्व में यश प्राप्त करता है।

निष्कर्ष (भावार्थ)

सच्ची सम्पत्ति वह नहीं जो तिजोरी में बंद रहे और घट जाए। वेद के अनुसार श्रेष्ठ धन वह है जो—

- प्रतिदिन बढ़े (Growth)
- शरीर और समाज को पोषण दे (Nourishing)
- सत्कार्यों से यश फैलाये (Fame)
- समाज में वीर, रक्षक और विद्वान उत्पन्न करे (Human Resource)

यह धन ईश्वर की उपासना और विज्ञान (अग्नि-तत्व) के सदुपयोग से ही प्राप्त होता है।

व्याकरण एवं निरुक्त (Grammatical Derivation)

यह मन्त्र वैदिक संस्कृत व्याकरण के कई सुन्दर नियमों को दर्शाता है:

- **रयिम्:** निघण्टु (२.१०.८) में 'मघम्' इत्यादि धन के नामों में 'रयि' शब्द का पाठ है। (रयि = धन)।
- **अश्रवत्:** यह 'अश्' (व्याप्तौ/प्राप्त करने) धातु से बना है। वेद में 'लेट्' लकार (Subjunctive mood) का प्रयोग होता है। पाणिनी सूत्र 'लेटोऽडाटौ' (३.४.९४) से अडागम हुआ है और 'इतश्च लोपः' (३.४.९७) से 'तिप्' प्रत्यय के इकार (इ) का लोप होकर 'अश्रवत्' पद सिद्ध होता है। (व्यत्यय से यहाँ परस्मैपद का प्रयोग है)।
- **पोषम्:** 'पुष्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय लगकर यह शब्द बना है, जिसका अर्थ है पुष्ट करने वाला या स्वयं बढ़ने वाला।
- **दिवेदिवे:** 'दिक्' (दिन) शब्द से सप्तमी विभक्ति का रूप है। 'नित्यवीप्सयोः' (८.१.४) सूत्र से निरन्तरता (व्याप्ति/प्रतिदिन) के अर्थ में इस शब्द की द्विरुक्ति (Repetition) हुई है।
- **यशसम्:** 'यशोऽस्यास्तीति यशसम्' - जिसके पास यश है। यहाँ 'अर्शादिभ्योऽच्' (५.२.१२७) सूत्र से 'अच्' प्रत्यय हुआ है।
- **वीरवत्तमम्:** 'वीर' शब्द से 'मत्तुप्' (वत्) प्रत्यय लगा है (वीरों वाला), और उसमें अतिशयता (Superlative degree - सबसे अधिक) दर्शाने के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है, जिससे 'वीरवत्तमम्' सिद्ध होता है।